विश्व न्याय मन्दिर

रिजवान 2019

विश्व के बहाईयों को

परमप्रिय मित्रों,

अब जबकि 'परम महान उत्सव' निकट आ चुका है, हम आभार और आशा की भावनाओं से अत्यंत आह्लादित हैं--आभार उन अद्भुत कार्यों के लिए जिन्हें पूरा कर पाने में बहाउल्लाह ने अपने अनुयायियों को सक्षम बनाया है, और आशा उन बातों के लिए जो निकट भविष्य के गर्भ में हैं।

बहाउल्लाह के जन्म के द्विशताब्दी समारोह के विश्वव्यापी आयोजनों से उत्पन्न गति तब से बढ़ती ही चली गई है। बहाई समुदाय के विकास में आई तेजी, उसकी बढ़ती हुई क्षमता, और अपने अधिक से अधिक सदस्यों की ऊर्जाओं से लाभ उठा सकने की उसकी योग्यता उसके हाल की वैश्विक उपलब्धियों से स्पष्ट रूप से उभर कर सामने आई है। इन सबमें, समुदाय-निर्माण सम्बंधी कार्यकलापों में जो प्रगति हुई है, वह खास तौर पर उल्लेखनीय है। वर्तमान पांच वर्षीय योजना बहाई विश्व द्वारा बीस वर्षों तक किए गए उन प्रयासों का अनुसरण करती है जबकि कार्यकलापों को सुव्यवस्थित तरीके से बेहतर बनाने और उनकी संख्या में वृद्धि करने के प्रयत्न किए गए--किन्तु उल्लेखनीय यह है कि, योजना के आरंभिक ढाई वर्षों में ही, केवल मूल कार्यकलापों की संख्या में आधे से भी ज्यादा बढ़ोत्तरी हुई है। किसी भी खास समय में, वैश्विक समुदाय ने ऐसी गतिविधियों में, आध्यात्मिक सच्चाइयों की तलाश करने और उनका प्रत्युत्तर देने में उन्हें सहायता प्रदान करते हुए, दस लाख से भी अधिक लोगों को संलग्न कर सकने की अपनी क्षमता का परिचय दिया है। उसी संक्षिप्त समयावधि में, प्रार्थना-सभाओं की संख्या लगभग दोगुनी हो गई--जो कि आशा और उदार कृपा के 'मूल स्रोत' से मानवजाति की बढ़ती हुई दूरी के लिए एक अति आवश्यक प्रत्युत्तर था। यह जो प्रगति हुई है उसकी एक विशेष संभावना है, क्योंकि भक्तिपरक सम्मिलन समुदाय के जीवन में नई चेतना का संचार करते हैं। सभी आयुवर्ग के लोगों के लिए शैक्षणिक प्रयासों को पिरोते हुए, वे उन प्रयासों के इस उच्च उद्देश्य को बल प्रदान करते हैं : ऐसे समुदायों का पोषण करना जिनकी खासियत है परमात्मा की उनकी उपासना और मानवजाति की सेवा। यह बात उन समुदाय-समूहों से ज्यादा अन्य कहीं उतनी अधिक स्पष्ट नहीं है जहां बहाई गतिविधियों में बड़ी संख्या में लोगों की भागीदारी को जारी रखा गया है और जहां मित्रगण अपने समुदाय के विकास के तीसरे मील के पत्थर को पार कर चुके हैं। हम यह देखकर खुश हैं कि जहां विकास की प्रक्रिया इस हद तक आगे बढ़ चुकी है ऐसे समुदाय-समूहों की संख्या 'योजना' के आरंभ से लेकर अभी तक दोगुनी से भी ज्यादा हो गई है और अब उनकी संख्या लगभग पांच सौ है।

रूपांतरण की जो प्रक्रिया अभी जारी है उसके पैमाने को मापने में यह संक्षिप्त सर्वेक्षण न्याय नहीं कर सकता। 'योजना' के बचे हुए दो वर्षों का परिदृश्य बड़ा ही उज्ज्वल है। उन समुदाय-समूहों में जो, हमारी आशा के अनुरूप, ज्ञान और संसाधनों के भंडार बन चुके हैं, सुदृढ़ विकास-कार्यक्रमों से सीखे गए पाठों के व्यापक संवितरण के माध्यम से, इस पिछले वर्ष बहुत कुछ हासिल किया गया है। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केंद्र, सलाहकारगण, और उनके अथक सहायक मंडल सदस्य यह सुनिश्चित करने के लिए अनवरत प्रयास करते रहे हैं कि दुनिया के सभी हिस्सों में निवास करने वाले बंधु ज्ञान में हुई इस समृद्धि से लाभान्वित हों और जो अंतर्दृष्टियां प्राप्त हो रही हैं उन्हें वे अपने यहाँ

की वास्तविकताओं में क्रियान्वित करें। हम यह देखकर आनन्दित हैं कि बढ़ती हुई संख्या में समुदाय-समूहों, और उनके अंतर्गत आने वाले गांवों और पास-पड़ोसों में, मित्रों का एक नाभिकीय-बिंदु उभर कर सामने आया है, जो अपने क्रिया और समीक्षा के माध्यम से किसी खास समय में अपने आस-पास विकास की प्रक्रिया की प्रगति के लिए आवश्यक तत्वों की तलाश में जुटे हैं। वे संस्थान रूपी सक्षम उपकरण से संबल प्राप्त कर रहे हैं जिसके माध्यम से समुदाय की आध्यात्मिक और भौतिक समृद्धि में योगदान देने की क्षमता का विकास हो रहा है, और उनकी सक्रियता के कारण, उनके साथ भागीदारी निभाने वाले मित्रों की संख्या भी बढ़ रही है। स्वाभाविक बात है कि अलग-अलग स्थानों में इन स्थितियों में अन्तर है, और साथ ही विकास सम्बंधी विशेषताओं में भी फर्क है। लेकिन सुव्यवस्थित प्रयास के माध्यम से, हर कोई मौजूदा कार्य में अपना अधिक से अधिक प्रभावी योगदान दे सकता है। हर परिवेश में, अन्य लोगों को ऐसे सार्थक और उत्प्रेरक वार्तालापों में शामिल करना एक विशुद्ध आनन्द का विषय है जो, शीघ्र या क्रमिक रूप से, आध्यात्मिक संवेदनाओं को स्पंदित करने की दिशा में ले जाते हों। आस्थावान व्यक्ति के हृदय में जितनी ही प्रखर लौ प्रज्ज्वलित की जाएगी उसकी उष्मा के संसर्ग में आने वाले लोगों द्वारा महसूस की जाने वाली आकर्षण की शक्ति भी उतनी ही प्रबल होगी। और जो हृदय बहाउल्लाह के प्रेम से अनुप्राणित है उसके लिए ऐसे आत्मीय चेतना-सम्पन्न लोगों की तलाश, सेवा के पथ पर अग्रसर होने पर उन्हें प्रोत्साहित करने, जब वे अनुभव प्राप्त कर लें तो उनका साथ निभाने और--संभवतः सबसे ज्यादा आनन्द का विषय--उन लोगों को प्रभुधर्म में पुष्ट होते, स्वतंत्र रूप से सेवा के लिए उठ खड़े होते और उस समान यात्रा में अन्य लोगों की सहायता करते हुए देखने से ज्यादा उपयुक्त किस कार्य की कल्पना की जा सकती है! इस क्षणभंगुर जीवन में ये ही सबसे ज्यादा अभिलषित क्षण हैं।

बाब के जन्मोत्सव की द्विशताब्दी पास आने के कारण इस आध्यात्मिक उद्यम को आगे बढ़ाने के परिप्रेक्ष्य और भी अधिक रोचक बन गए हैं। इससे पहले वाली द्विशताब्दी की तरह ही, यह वार्षिकोत्सव भी एक अपरिमित रूप से मूल्यवान अवसर है। यह सभी बहाईयों को अपने आस-पास के लोगों को 'ईश्वर के महान दिवस' के प्रति, 'दिव्य अस्तित्व' के दो प्रकटावतारों, विश्व के क्षितिज को दीप्तिमान बनाने वाले एक के बाद एक आने वाले दो 'प्रखर नक्षत्रों', द्वारा संकेतित स्वर्गिक कृपा के असाधारण प्रवाह के प्रति, जागरूक करने के लिए विलक्षण अवसर उपलब्ध कराता है। दो वर्ष पूर्व मनाए गए द्विशताब्दी समारोह के अनुभवों के कारण, आने वाले दो चक्रों में क्या कुछ संभव हो सकता है उसका परिमाप सबको ज्ञात है, और उस अवसर पर जो कुछ भी सीखा-समझा गया उन सबको इस वर्ष मनाए जाने वाले 'युगल पावन जन्मोत्सवों' के लिए सुनियोजित किया जाना चाहिए। अब जबकि दो सौवें वर्ष का वार्षिकोत्सव निकट आ रहा है, हम आपकी ओर से 'पवित्र समाधियों' पर निरन्तर वन्दना करेंगे, और यह प्रार्थना करेंगे कि बाब को समुचित सम्मान देने के लिए आपके द्वारा किए जाने वाले प्रयास 'उनके' द्वारा पूर्वघोषित धर्म को और आगे बढ़ाने में सफल हों।

रचनात्मक युग की प्रथम शताब्दी के समापन में अब सिर्फ ढाई वर्ष रह गए हैं। इसके साथ ही, प्रभुधर्म के शौर्य काल के दौरान अत्यंत त्याग की भावना से रखी गई प्रभुधर्म की बुनियाद को सुदृढ़ करने और उसके विस्तार के लिए किए गए पावन प्रयासों के सौ वर्षों की परिसमाप्ति हो जाएगी। उसी समय बहाई समुदाय अब्दुल-बहा के स्वर्गारोहण की शताब्दी भी मनाएगा--उस क्षण की शताब्दी जब प्रिय मास्टर स्वर्गिक महिमा की आश्रय-स्थली में 'अपने पिता' से पुनर्मिलन के लिए इस संसार की सीमाओं से मुक्त हो गए थे। अगले ही दिन सम्पन्न हुई उनकी शव-यात्रा एक ऐसी घटना थी "जैसी फिलिस्तीन ने पहले कभी नहीं देखी थी।" इसकी समाप्ति पर, उनके पार्थिव अवशेषों को बाब की समाधि के एक प्रकोष्ठ में चिर-विश्रान्ति के लिए रख दिया गया था। लेकिन शोगी एफेन्दी की परिकल्पना यह थी कि यह एक अस्थायी व्यवस्था होगी। उपयुक्त समय आने पर, एक ऐसी समाधि का निर्माण किया जाना था जिसकी विशेषता अब्दुल-बहा के अद्वितीय पद के सुयोग्य हो।

अब वह समय आ गया है। बहाई विश्व का आह्वान किया जाता है कि वह एक ऐसे भवन का निर्माण करे जहां सदा-सदा के लिए उन अवशेषों को स्थापित किया जा सके। उसका निर्माण रिज़वान के उद्यान के निकट होना है उस भूमि पर जो 'आशीर्वादित सौन्दर्य' के चरण-चिह्नों से पावन हुई है; इस तरह अब्दुल-बहा की समाधि अक्का और हाइफा की पवित्र समाधियों के बीच के अर्द्ध-चंद्राकार से दिखते स्थान में अवस्थित होगी। भवनशिल्प की योजनाओं पर काम आगे बढ़ रहा है, और आने वाले महीनों में और अधिक सूचनाएं उपलब्ध कराई जाएंगी।

और अब जब हम आने वाले वर्ष और उसकी संभावनाओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं तो हमारे मन में अत्यधिक हर्ष की भावना उमड़ उठती है। आप में से प्रत्येक व्यक्ति से--उन सबसे जो बहाउल्लाह की सेवा में जुटे हुए हैं, जो हर राष्ट्र में शांति के ध्येय के लिए प्रयासरत हैं--हम आशा करते हैं कि आप अपने महान दायित्व को पूरा करेंगे।

- विश्व न्याय मन्दिर